Ansh - Journal of History
A Peer Reviewed International Refereed Journal
E-ISSN No. 2582-046X
International Journal for Research in Applied History
Website: www.anshjournal.com

बसंतगढ का ऐतिहासिक अध्ययन

MR. KALPESH KUMAR SONI
Pacific College of Social Science and Humanities Udaipur, Rajasthan
Email : kkalpeshsoni@gmail.com

भौगोलिक विवरण

बसंतगढ़ 24°42'57" उत्तरी अंक्षाश व 73°02'10" पूर्वी देशान्तर में स्थित है। यह वर्तमान में सिरोही जिले की पिण्डवाडा उपखंड का गांव है. जो काफी प्राचीन समय से बसा हुआ है। पहले यह प्राचीन गांव वर्तमान बसंतगढ़ से 1 कि.मी. दक्षिण में स्थित है। जिसका नाम "भटेश्वर फली" कहा जाता हैं। उदयपुर से बसंतगढ़ की दुरी 110 कि.मी. और सिरोही से बसंतगढ़ की दुरी 30 कि.मी है। बसंतगढ़ से 5 कि.मी. की दुरी पर पिण्डवाडा-अहमदाबाद राष्ट्रिय राजमार्ग स्तिथ है और यहाँ का प्रमुख नजदीकी रेलवे स्टेशन "पिण्डवाडा रेलवे स्टेशन" है। यह स्थान अरावली की पहाडियों से घिरा हुआ है। बसंतगढ़ में सबसे ज्यादा वृट वृक्ष (बरगद के पेड़) देखने को मिलते है साथ ही यहाँ पर बैर के पेड़,नारियल के पेड़,खजूर के पेड़ व अंग्रेजी बबूल भी पाए जाते है। यहाँ कई छोटी मोटी नदिया भी बहती है। लेकिन यह नदिया सिर्फ वर्षा जल पर ही निर्भर रहती है। इसलिए वर्ष भर नहीं बहती है। यहाँ की अरावली की पहाड़ी में ताम्बा भी पाया जाता है। बसंतगढ़ किले से कुछ ही कदम की दुरी पर प्राचीन अम्बे माता का मंदिर है। इस मंदिर के पीछे कुछ साल पहले तक ताम्बा निकालने का काम चला था। जो बहुत समय तक चला था। यहाँ की लाहिनी बावड़ी के पास सरस्वती नदी भी बहती थी। लेकिन वर्तमान में वो लुप्त हो चुकी है। बसंतगढ़ से कुछ ही दुरी पर पश्चिम में बनास नदी बहती है। जो आगे जाकर वेस्ट बनास बांध में गिरती है। बसंतगढ़ की भटेश्वरफली में मुख्यत गरासिया और भील जाती के लोग निवास करते है। महाराणा कुम्भा के समय तक मेवाड़ राज्य में बसंतगढ़ के पहाड़ी मार्ग द्वारा ही जाया जा सकता था। बसंतगढ़ के उत्तर में अजारी गांव व पिण्डवाडा नगर स्थित है,दक्षिण में बनास गांव और जे.के.लक्ष्मी सीमेंट की फेक्टरी मौजूद है,पश्चिम में इसके नांदिया गाँव व आबू की पहाड़िया और पूर्व में खिलाफली व् रामेश्वर महादेव मंदिर की पहाड़िया है। यहाँ आस पास मुख्यत गेहू और मक्के की फसल बोई जाती है। यहाँ की भूमि पूर्ण रूप से उपजाऊ है। यहाँ के लोग मुख्यत स्थानीय आदिवासी भाषा के साथ साथ गुजरती-मारवाड़ी व मेवाड़ी भाषा का भी प्रयोग करते है।

इतिहास

Ansh - Journal of History
A Peer Reviewed International Refereed Journal
E-ISSN No. 2582-046X
International Journal for Research in Applied History
Website: www.anshjournal.com

पिण्डवाडा से बसंतगढ़ करीब 10 कि.मी. की दुरी पर स्तिथ है। अजारी से करीब 3 कि.मी.दक्षिण में वसंतगढ़ है। जिसको वसंतपुर भी कहते है ,और लोगो में यह "वातपरागढ़" नाम से प्रसिद्ध है,जो वसंतपुरगढ़ का अपभ्रंश है। सिरोही राज्य के बहुत से पुराने स्थानों में से यह एक है। सिरोही राज्य में जितने भी शिलालेख मिले है,उनमें सबसे पुराना वि.सं. 682 का यही से मिला है। मेवाड़ के महाराणा कुम्भकर्ण (कुम्भा) ने यहा की पहाड़ीयो पर गढ़ बनवाया तब से वसंतपुर के स्थान में वसंतगढ़ नाम प्रसिद्ध हुआ। यहाँ की पहाडियों पर क्षेमकरी (क्षेमार्य) नामक देवी का मंदिर सत्यदेव नामक पुरुष ने वि.स.682 (ई.स.625) में बनाया था। इसका लेख यहा के पत्थरों के ढेर में मिला था, जिसमे पाया जाता है, कि 'यह मंदिर बना उस समय यह प्रदेश वर्मलात राजा के अधिकार में था और आबू तथा उसके आस पास का देश उक्त राजा के सामंत राजिल के आधीन था, जो वज्रभट्ट (सत्याश्रय) का पुत्र था। वर्मलात राजा किस वंश का था इस विषय में उक्त लेख में कुछ भी नही लिखा, परन्तु अनुमान होता है, वह चावड़ा वंश का हो, क्योंकि उसकी राजधानी भीनमाल (श्रीमाल) नगर (जोधपुर राज्य में) थी, जहा के रहने वाले ब्रह्मगुप्त नामक ज्योतिषी ने, जो विष्णु का पुत्र था, शक सवंत 550,वि.स. 685 (ई. स. 628)में 'स्फुटआर्य सिद्धांत' नामक ज्योतिष का ग्रन्थ रचा, संभव है, कि उस समय वहां पर चाप (चावड़ा) वंशी व्याघ्रमुख राजा था। संभव है, कि व्याघ्रमुख उक्त वर्मलात का उत्तराधिकारी हो उपयुक्त लेख से प्रसिद्ध कवि माघ का, जो भीनमाल का रहने वाला था, समय निश्चित होता है। क्योंकि वह अपने रचे हुए 'शिशुपाल वध' (माघ) काव्य में लिखता है। की उसका दादा सुप्रभदेव राजा वर्मलात का मुख्य मंत्री सर्वाधिकारी था।[1] वल्लभी के अंतर्गत भिन्नमाल या भीनमाल राज्य था। संभवत श्री भीनमाल को ही श्रीमाल कहा जाता था। इसी भीनमाल नरेश वर्मलात के यहाँ एक सुप्रभदेव नामक मंत्री थे। शिशुपाल वंध महाकाव्य के अंत में जो पांच श्लोक कवि वंश के विषय में दिए गए है, उनमे सुप्रभदेव को वर्मलात के यहाँ सर्वाधिकारी तथा द्वितीय नरेश ही कहा गया है।[2] सुप्रभदेव इस वर्मलात का, जो विक्रम संवत 682 (ई.स. 625) में विधमान था,समकालीन था, अतएव सुप्रभदेव के पौत्र माघ कवि का विक्रम संवत की 8 वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध (ई.स. की सातवी शताब्दी के उत्तरार्द्ध) में होना स्थिर होता है।[3] डॉ. किल्होर्न को राजपूताने के (सिरोही) के बसंतगढ़ नामक स्थान से वर्मलात किसी राजा का 682 विक्रम संवत अर्थात 625 ई. का शिलालेख प्राप्त हुआ था। भीनमाल के आस पास के क्षेत्र में इस लेख के मिलने के कारण निश्चित ही थे वर्मलात सुप्रभदेव के आश्रयदाता रहे होंगे। शिशुपाल काव्य के अंत में माघ ने पांच श्लोको में अपने वंश का वर्णन किया है। जिससे ज्ञात होता है, की उसके पितामह सुप्रभदेव गुजरात के वर्मलात नामक राजा के मंत्री थे। शिशुपाल की हस्तलिखित प्रतियों में इस राजा को वर्मलात, वर्मनाभ,

[1] गौरीशंकर हीराचंद ओझा/सिरोही राज्य का इतिहास/प्रकाशन-राजस्थानी ग्रंथागार जोधपुर/चतुर्थ संस्करण 2018 पृष्ठ स.29-31
[2] श्रीमती विजय लक्ष्मी/शिशुपालवध महाकाव्य में ध्वनी-तत्व एक अध्याय/इलाहाबाद विश्वविधालय-1998 पृष्ठ स. 1
[3] गौरीशंकर हीराचंद ओझा/सिरोही राज्य का इतिहास/प्रकाशन-राजस्थानी ग्रंथागार जोधपुर/चतुर्थ संस्करण 2018 पृष्ठ स.29-31

Ansh - Journal of History
A Peer Reviewed International Refereed Journal
E-ISSN No. 2582-046X
International Journal for Research in Applied History
Website: www.anshjournal.com

धर्मलात और धर्मनाभ आदी नामो से मण्डित किया है। उक्त शिलालेख के प्राप्तकर्ता डॉ.कीलहार्न ने राजा का शुद्ध नाम वर्मलात माना है, और उनको माघ के पितामह सुप्रभदेव का आश्रयदाता स्वीकार किया है।[4]

सातवी सदी में बसंतगढ़ के राजा वर्मलात के राज ज्योतीषी जिष्णु के पुत्र ब्रह्मगुप्त ने बसंतगढ़ में ही ब्रह्मस्फुट सिद्धांत की रचना की है। यह ब्रह्मगुप्त वही है, जो कोपरनीकस से 900 वर्ष पूर्व "सूर्य सिद्धांत" की स्थापना कर चुके थे। "शिशुपालवध" के प्रसिद्ध महाकवि माघ के दादा सुप्रभदेव बसंतगढ़ के महामात्य थे। इस कल्पना से इनकार नही किया जा सकता की माघ का बसंत वर्णन भीनमाल का नही, बसंतगढ़ के पर्वतीय एवं नगरीय वैभव का चित्र उपस्तिथ करना है, जो इस दौहे से स्पष्ट होता है। दृ "नवपलाशपलाशवनं नवपराग परागत पकड़जगय मृदु लतान्त लतान्त भयोकयन स सुरभि सुरभि सुमनों भरैः।[5]

यहाँ के टूटे हुए जैन मंदिर के तहखाने से एक बड़ी पीतल की जैन मूर्ति भी निकली थी,जिस पर वि.स. 744 (ई.स. 687) का लेख है।[6] बसंतगढ़ से प्राप्त आदमकद धातु प्रतिमाओ के अधोभाग में अंकित संवत 744 (ई.687) की है जिसका साहित्यिक अंश निम्न प्रकार है- 'ॐ नीरागत्वादि भावेन सर्वज्ञत्व विभावकं ज्ञात्वा भगवतां रूपं जिनानामेव पावनमय 'साक्षात पितामहेनेव विश्व रूपविधायिनाय शिल्पिना शिव नागेन कृतमेतज्जिन द्वयमय अर्थात " वीतरागत्व आदि गुणों से सर्वज्ञत्व प्रकट करने वाली जीन भगवन्तो की मूर्ति है ऐसा जानकर साक्षात ब्रह्मा की तरह सर्व प्रकार के रूपों को बनाने वाले शिल्पी शिवनाग ने ये दोनों जीन मूर्ति बनाई है।[7]

बसंतगढ़ से कुछ ही दुरी पर मिले वि.स.703 (ई स.646) के सामोली लेख में बसंतगढ़ की जानकारी मिलती है। जिसमे लिखा है की " शत्रुओ को जितने वाला देव , ब्राह्मण और गुरुजनों को आनंद देने वाला और अपने कुल रूपी आकाश का चन्द्रमा राजा शिलादित्य पृथ्वी पर विजय हो रहा है। उसके समय वटनगर से आये हुए महाजनो के समुदाय ने,जिसका मुखिया जेंतक था आरण्यगिरी में लोगो का जीवन (साधन) रूपी आगर उत्पन्न किया, और महाजन (महाजनों के समुदाय) की आज्ञा से जेंतक महत्तर ने अरणयवासिनी देवी का मंदिर बनवाया , जो अनेक देशो से आये हुए अठारह वैतालिको(स्तुति गायकों) से विख्यात और नित्य आने वाले धन-धान्य संपन्न मनुष्यो की भीड़ से भरा हुआ था। उसकी प्रतिष्ठा कर जेंतक महत्तर ने यमदूतो को आते देख 'देवबुक' नामक सिद्ध स्थान पर अग्नि में प्रवेश किया,(यह वटनगर यही बसंतगढ़ है) महत्तर राज कर्मचारियों का एक बड़ा पद था, जिसका अपभ्रंश मेहता है। ब्राह्मण, महाजन , कायस्थ आदि जातियों

[4] श्रीमती विजय लक्ष्मी/शिशुपालवध महाकाव्य में ध्वनी-तत्व एक अध्याय/इलाहाबाद विश्वविधालय-1998 पृष्ठ स.5
[5] डॉ.सोहनलाल पटनी/सिरोही राज्य का राजनैतिक एवं सांकृतिक इतिहास/राजस्थानी ग्रंथागार जोधपुर/संस्करण 1990 पृष्ठ.स.44
[6] गौरीशंकर हीराचंद ओझा/सिरोही राज्य का इतिहास/प्रकाशन-राजस्थानी ग्रंथागार जोधपुर/चतुर्थ संस्करण 2018 पृष्ठ स.29-31
[7] डॉ.सोहनलाल पटनी/सिरोही राज्य का राजनैतिक एवं सांकृतिक इतिहास/राजस्थानी ग्रंथागार जोधपुर/संस्करण 1990 पृष्ठ.स.43

Ansh - Journal of History
A Peer Reviewed International Refereed Journal
E-ISSN No. 2582-046X
International Journal for Research in Applied History
Website: www.anshjournal.com

के कई पुरुष अपने नामो के साथ मेहता की उपाधि, जो उनके प्राचीन गौरव की सूचक है अब तक चली आती है।[8]

यहाँ से दूसरा लेख वि.स.1066 (ई.स. 1042) का मिला था। जो परमार शासक पूर्णपाल के समय का है। वि.स. 1944 (ई.स. 1888) में डॉ.गौरीशंकर हीराचंद ओझा इस लेख की नकल लेने वसंतगढ़ (बसंतगढ़) गए,तो उनको मालूम हुआ की, कुछ वर्ष पहले एक भील ने इस लेख को बावड़ी में डाल दिया है। बावड़ी में जल बहुत गहरा होने से ऐसे बड़े पत्थर को वहा से निकलना असंभव था। परन्तु वि.स. 1957 (ई स. 1900) के आषाढ महीने में, जब बावड़ी का जल सुख गया तब डॉ.गौरीशंकर हीराचंद ओझा ने सिरोही के तत्कालीन महाराव से पिण्डवाडा स्टेशन पर निवेदन किया, की 'ऐसा उपयोगी लेख कई बरसो से बावड़ी में पड़ा हुआ है, और इस समय बावड़ी का जल सुख जाने के कारन वह निकल सकता है। सिरोही के महाराव को प्राचीन वस्तुओ का शौक होने के कारन उन्होंने उसी समय वहा के 'फारेस्ट रेंजर' राठौड़ अचलसिंह को बुलवाकर आज्ञा दी, कि 'कल का कल यह लेख बावड़ी में से निकलवा कर सिरोही पंहुचा देना। 'जिससे दुसरे दिन ही यह लेख वहा से निकलवा कर सिरोही भेज दिया गया। इस लेख में उत्पलराज से पूर्णपाल तक की वंशावली दी है,[9] जिसमें उत्पलराज का पुत्र आरण्यराज को बताया है, आरण्यराज का पुत्र अद्भुत कृष्णराज को बताया है, कृष्णराज का पुत्र धरणीवराह को बताया है, धरणीवराह का पुत्र महिपाल को बताया है और महिपाल का पुत्र धुंधक को बताया है, और धुंधक का पुत्र पूर्णपाल को बताया है, जो धुंधक की पत्नी अमृतादेवी के गर्भ से उत्पन्न हुआ था।[10] इस लेख में यह भी बताया गया है कि 'उक्त पूर्णपाल की छोटी बहिन लाहिनी, जिसका विवाह राजा विग्रहराज से हुआ था, विधवा होने पर अपने भाई के यहाँ चली आई। इस लेख में विग्रहराज की वंशावली भी दी है, इसमें बताया गया है की 'योट नामक द्विज अपने बाहुबल से राजा बना.उसके वंश में भवगुप्त राजा हुआ.फिर उसी वंश में संगमराज हुआ, जिसका पुत्र चच और उसका पुत्र विग्रहराज था। लाहिनी ने वशिष्ठपुर (वसंतपुर) में रह कर उसके सूर्य के टूटे हुए मंदिर को बनवाया।[11] सूर्यमंदिर का निर्माण वशिष्ठपुरुष ने किया था और पूर्णपाल के समय उसकी बहिन लाहिनी ने इसका जीर्णोद्धार करवाया था,[12] और लोगो के जल पीने की बावड़ी का जीर्णोद्धार करवाया। यह बावड़ी उक्त लाहिनी के नाम से अब तक लाणावाब (लाहिनी वापी) कहलाती है। जिस पर यह लेख लगाया गया था। इस लेख में इस स्थान का नाम वटपुर और वशिष्ठपुर मिलता है। वसंतपुर नाम वशिष्ठपुर से पड़ा हो। जिस

[8] गौरीशंकर हीराचंद ओझा/उदयपुर राज्य का इतिहास/पृथम संस्करण पृष्ठ स.98-99
[9] गौरीशंकर हीराचंद ओझा/सिरोही राज्य का इतिहास/प्रकाशन-राजस्थानी ग्रंथागार जोधपुर/चतुर्थ संस्करण 2018 पृष्ठ स.29-31
[10] एपिग्राफिया इंडिका,भाग 9 (1907-08)/प्रकाशन –आर्कियोलॉजिकल सर्वे ऑफ़ इंडिया/ पृष्ठ.स.10
[11] गौरीशंकर हीराचंद ओझा/सिरोही राज्य का इतिहास/प्रकाशन-राजस्थानी ग्रंथागार जोधपुर/चतुर्थ संस्करण 2018 पृष्ठ स.29-31
[12] जगदीशसिंह गहलोत/राजपूताने का इतिहास भाग-2/प्रकाशन-हिंदी साहित्य मंदिर जोधपुर /प्रथम संस्करण 1960 पृष्ठ.स 17

Ansh - Journal of History
A Peer Reviewed International Refereed Journal
E-ISSN No. 2582-046X
International Journal for Research in Applied History
Website: www.anshjournal.com

समय सूर्य के मंदिर का जीर्णोद्धार लाहिनी ने करवाया था,[13] धुंधक का उतराधिकारी उसका ज्येष्ठ पुत्र पूर्णपाल हुआ, जिसके राज्य समय के तीन शिलालेख मिले हैं। जिसमे से एक वि.स. 1099 (ई.स.1042) ज्येष्ठ सुदी 15 का वर्माण के 'ब्राह्मण स्वामी' नामक सूर्य मंदिर के एक स्तंभ पर खुदा हुआ है, दूसरा वि.स. 1099 (ई.स.1042) श्रावण वदी 9 का बसंतगढ़ की 'लाहिनी' वाव पर का और तीसरा वि.स. 1102 (ई.स. 1045) कार्तिक वदी 5 का भडून्द(भाटून्द) गाँव की बावड़ी में लगा हुआ है।[14] परमार राजाओ में सात राजा चन्द्रावती,आबू और बसंतगढ़ पर राज्य कर चुके थे। धुंधक का पुत्र पूर्णपाल कुंवरपदे में ही मर गया था।[15] वि.स.1099 (ई.स 1045) बसंतगढ़ प्रशस्ति में बदनपुर नामक नगर के निर्माण का भी उल्लेख है। जो तालाब, घर , राजप्रसाद , प्राकार , दुर्ग आदि से युक्त था। इसमें ब्राह्मण तथा वैश्य अपने धर्माचरण करते थे, और वह पुराणपाठी ब्राह्मण , गणिका तथा सैनिक की बस्ती से सुशोभित था। इस प्रशस्ति का लेखक हरि का पुत्र मातृशर्मा था और उसे शिवपाल ने उत्कीर्ण किया था।[16] वि.स.1117 (ई.स.1060) के भीनमाल के शिलालेख में धुंधक के पुत्र का नाम किष्णराज लिखा है। अतः अनुमान है कि इसके दो पुत्र थे- पूर्णपाल कृष्णराज।कृष्णराज पूर्णपाल का छोटा भाई था।उसके पीछे उसके राज्य का यही उतराधिकारी हुआ। इसके शिलालेख भीनमाल में मिले है। जिसमे पहला वि.स 1117 (ई.स.1060) माघ सूद 6 का और दूसरा वि.स.1123 (ई.स.1066) ज्येष्ठ वद 12 का.इसमें यह "महाराजधिराज" लिखा गया हैं। वि.स.1319 (ई.स. 1262) के चाहमान चाचिगदेव के सुंधामाता वाले लेख उसे "भूपति" की उपाधी दी गई है। जिसमें उसकें बसंतगढ़, भीनमाल और किराडू का एक छत्र राजा होना प्रतीत होता है।[17]

मेवाड़ के महाराणा कुम्भा ने यहाँ की पहाडियों पर गढ़(दुर्ग) बनाया था।[18] कुम्भा के कृपापात्र शाह गुणराज का अलग से वर्णन मिलता है, जिसने अजारी, पिण्डवाडा और सालेरा में मंदिर बनवाये थे,तथा अनेक प्राचीन मंदिरों का पुनर्निर्माण कराया था।शाह केला का पुत्र वेला कुम्भा का कोषाध्यक्ष था,उसने चित्तौडगढ़ में छठे जैन तीर्थंकर शांतिनाथ का मंदिर बनवाया था। उसी ने विजय स्तंभ के निकट सुंदर श्रृंगार चंवरी बनवाई थी। कुम्भा के संपन्न एवं श्रद्धालु प्रजाजनों ने सेमा,वसंतपुर(वसंतगढ़), भुला आदि स्थानों पर जो मंदिर बनवाए थे उसके भी विवरण मिलते हैं।[19]

[13] गौरीशंकर हीराचंद ओझा/सिरोही राज्य का इतिहास/प्रकाशन-राजस्थानी ग्रंथागार जोधपुर/चतुर्थ संस्करण 2018 पृष्ठ स.29-31

[14] गौरीशंकर हीराचंद ओझा/सिरोही राज्य का इतिहास/प्रकाशन-राजस्थानी ग्रंथागार जोधपुर/चतुर्थ संस्करण 2018 पृष्ठ स.89-90
[15] श्यामलदास/वीर विनोद द्वितीय भाग खंड 2/ नरेद्र प्रकाश जैन मोतीलाल बनारसीदास ,दिल्ली द्वारा प्रकाशित /पृष्ठ स. 1094
[16] राजस्थान के इतिहास के स्रोत/डॉ.गोपीनाथ शर्मा/ 9 वां संस्करण 2019/प्रकाशक – राजस्थान हिंदी ग्रन्थ अकादमी पृष्ठ स.72
[17] पंडित विश्वेश्वरनाथ रेउ/भारत के प्राचीन राजवंश भाग 1/ पृष्ठ स.73-74
[18] गौरीशंकर हीराचंद ओझा/सिरोही राज्य का इतिहास/प्रकाशन-राजस्थानी ग्रंथागार जोधपुर/चतुर्थ संस्करण 2018 पृष्ठ स.29
[19] राजेंद्र शंकर भट्ट/महाराणा कुम्भा/प्रकाशन- नेशनल बुक ट्रस्ट नई दिल्ली/ प्रथम संस्करण 2008 पृष्ठ स.191

Ansh - Journal of History
A Peer Reviewed International Refereed Journal
E-ISSN No. 2582–046X
International Journal for Research in Applied History
Website: www.anshjournal.com

यहाँ के टूटे हुए जैन मंदिर के तहखाने में से निकली मूर्तियों में एक बड़ी मूर्ति पर वि.स. 1507 (ई.स.1450) माघ सुदी 11 का मेवाड़ के महाराणा कुम्भकर्ण(कुम्भा) के समय का लेख है।[20] जिस पर लिखा है की "वि.सं.१५०७ वर्षे माघ सुदी ११ बुधे राणा श्री कुंभ कर्ण राज्ये वसंत पुर चैत्ये तदुद्धार कारको प्राग्वाट ब्य.झगडा भा.मेवादे पुत्र व्य.सडनेन भा. माणिक दे पुत्र कान्हा पौत्र जोणादी युतेन प्रागवाट व्य. घंणसी भा. लिंवी पुत्र व्य.भादाकेन भा. आल्हू पुत्र जावडेन भोजादि युतेन मूल नायक श्री शांतिनाथ विवं कारितं प्रतिष्ठितं तपा श्री सोम सुन्दर सूरि तत्पट्टलंकरण श्री मुनि सुन्दर सुरि श्री जय चन्द्र सुरि पट्ट प्रतिष्ठितं गच्छाधिराज श्री रत्न शेषर सूरि गुरुभीः" अर्थात "वि.स. 1507 (ई.स. 1450) माघ सूदी 11 बुधवार को महाराणा कुम्भा के राजत्वकाल में वसंतपुर के चैत्यालय का जीर्णोद्वार कराया गया।यह जीर्णोद्वार कार्य श्रेष्ठी झगड़ा आदि के परिवार वालो ने कराया था। जिसका उल्लेख इस प्रकार है। इस श्रेष्ठी झगड़ा की स्त्री का नाम मेघादेवी था। इसके एक पुत्र था। जिसका नाम मंडन था। जिसकी स्त्री माणिकदे के काल्हा उत्पन्न हुआ।इस परिवार के अतिरिक्त व्य. धनसिंह की स्त्री लींबा देवी से उत्पन्न पुत्र व्य. भादा स्वसंतान जावड़ भोजराज आदि ने भी सहायता दी थी।इसकी प्रतिष्ठा रत्नाशेखर सूरी ने की थी।[21]

महाराणा कुम्भा का एक ताम्रपत्र वि.स.1494 (ई.स.1437) का मिला है,जिसमे अजाहरी(अजारी) परगने के चुरडी (चवरली) गाँव में भूमि देने का उल्लेख है,अतएव महाराणा कुम्भा ने आबू आदि उक्त संवत से पहले ही अधिकार में कर लिए थे।[22] कुम्भा को प्रारम्भिक समय में काफी कठिनाईयों का सामना पडा था व आस-पास कें राज्य मेवाड़ की कमजोर स्थिति को देखकर अतिक्रमण करने लगे थे। मेवाड़ के पश्चिम की और सिरोही के देवड़ा(चैहान) शासको ने महाराणा मोकल के समय विस्तार का क्रम चला रखा था। वहा के शासक महाराव सैंसमल अपना साहस ज्यादा ही दिखाने लगे थे। कुम्भा का ध्यान जिस दिन नागौर की ओर था, उन्होंने मेवाड़ का कोटडा परगना अपने कब्जे में कर लिया था। इसलिए कुम्भा को को उन्ही दिनों इधर भी सेना भेजनी पड़ी। सिरोही पर आक्रमण हुआ महाराव सैंसमल सामना नही कर सका और सिरोही के पिण्डवाडा, नांदिया, अजारी, बसंतगढ़ आदि मेवाड़ के कब्जे में हो गए। इस प्रकार मेवाड़ के निकट पड़ने वाला सिरोही का बहुत सा पूर्वी इलाका मेवाड़ में मिल गया।[23]

उन्होंने आबू के मजबूत किले को अपने राज्य में मिलाना चाहा और उसके लिये राव शलजी के बेटे डोडीआ नरसिंह को फौज के साथ सिरोही पर भेजा, जिसने आबू तथा वसंतगढ़ आदि का मेवाड़ वालो का दखल जमा दिया. महाराणा कुम्भा ने, जिसको किला बनवाने का बड़ा शौक था, वसंतगढ़ का किला

[20] गौरीशंकर हीराचंद ओझा/सिरोही राज्य का इतिहास/प्रकाशन-राजस्थानी ग्रंथागार जोधपुर/चतुर्थ संस्करण 2018 पृष्ठ स.29-31

[21] पूरणचन्द्र नाहर/जैन लेख संग्रह-प्रथम खंड/प्रकाशन – बी.एल. प्रेस-कलकत्ता 1918/पृष्ठ स. 265/लेख.स.953

[22] गौरीशंकर हीराचंद ओझा/सिरोही राज्य का इतिहास/प्रकाशन-राजस्थानी ग्रंथागार जोधपुर/चतुर्थ संस्करण 2018 पृष्ठ स.117

[23] राजेंद्र शंकर भट्ट/महाराणा कुम्भा/प्रकाशन- नेशनल बुक ट्रस्ट नई दिल्ली/ प्रथम संस्करण 2008 पृष्ठ स.46-47

Ansh - Journal of History
A Peer Reviewed International Refereed Journal
E-ISSN No. 2582-046X
International Journal for Research in Applied History
Website: www.anshjournal.com

बनवाया और आबू पर वि.स. 1509 (ई.स. 1452) में अचलगढ़ का किला बनवाया.महाराणा कुम्भा के आबू आदि छिनने का कारण ऐसा माना जाता है, कि महाराव सैंसमल इधर उधर का देश दबाकर अपना राज्य बढ़ाना चाहते थे और इन्होने सिरोही की सीमा से मिले हुए मेवाड़ के कितने गाँवों पर अपना अधिकार जमा लिया था, जिससे नाराज होकर महाराणा कुम्भा ने आबू आदि को छीना था।[24]

मेवाड़ और कुम्भा दोनों ही दोनों की श्रेष्ठता इस उक्ति से सिद्ध होती है। मेवाड़ की सुरक्षा के लिए जो 84 दुर्ग बनवाए गए,उनमें से 32 दुर्ग कुम्भा ने बनवाए थे," जो कर्नल जेम्स टॉड के समय से प्रचलन में है। "वीर विनोद ने भी 32 किलों (दुर्ग) की संख्या भर बताई है, उनमे से सभी के नाम और स्थान नही बताए हैं, इतना भर कहा है: "जिनको देखकर ताज्जुब होता है की एक पुश्त में इतनी इमारतें कैसे तैयार हुईं". मेवाड़ अथवा कुम्भा के संबंध में शिलालेखो तथा ग्रंथो में जो विवरण मिलते हैं। उनमे से किसी भी 32 दुर्गों के नाम अथवा निर्माण-क्रम-तिथि आदि नही हैं.परन्तु यह अवश्य मिलता है कि इनका निर्माण मेवाड़ की सुरक्षा के लिए कराया गया था. जैसे , पश्चिम सीमा के तंग रास्ते की सुरक्षा के लिए सिरोही के निकट वसंतगढ़ नाम का दुर्ग बनवाया गया।[25] मेवाड़ राज्य को व्यवस्था के लिए कुम्भा ने चार प्रान्तों में विभाजित कर रखा था: जिसमे आबू, सिरोही, पिण्डवाडा हेतु वसंतगढ़ व गौडवाड़ हेतु कुम्भलगढ़ को केन्द्र रखा।[26]

कुम्भा के समय में, विशेषतः उनके प्रभाव-क्षेत्र के विस्तार तथा निकट के गुजरात से सतत संकट के कारण, सिरोही जिले के पूर्वी कोने में सिरोही शहर से पांच मील, उची उठी पहाड़ी पर बने बसंतगढ़ का भी बहुत सामरिक महत्त्व था.साथ ही यह अत्यंत प्राचीन धार्मिक-सांकृतिक केंद्र था। दोनों ही दृष्टियों से इसकी ओर कुम्भा का ध्यान जाना स्वाभाविक था। इसका आर्थिक महत्त्व भी था, चुकी इसके आस पास चांदी, जस्ते-जिंक की प्राचीन खानों के अवशेष भी हैं। यहाँ से प्राप्त शिलालेखो से प्रकट है की उनके समय में यह स्थान कुम्भा के अधिकार में था।[27] यह आचार्यकारी है कि कुम्भा के शासक काल की जो अवधि सैनिक गतिविधियों की दृष्टी से अधिक व्यस्त रही, उसी में उनके समय के सर्वाधिक निर्माण कार्य हुए। वि.स.1500 (ई.स 1443) से वि.स.1515 (ई.स.1458) के बीच कुम्भा को लगातार मालवा, गुजरात, और नागौर के सुलतानो से युद्ध करने पड़े, और इसी अवधि में चित्तौड़ का कीर्तिस्तंभ, कुंभस्वामी का मंदिर, कुम्भलगढ़, वसंतगढ़, अचलगढ़ आदि दुर्ग बने।[28]

कीर्तिस्तंभ प्रशस्ति के श्लोक संख्या 7 और 8 में उल्लेख है की

महामुनिश्रेष्ठवशीष्ठयोगप्रवित्रचित्रानलकुण्डशोधि !

[24] गौरीशंकर हीराचंद ओझा/सिरोही राज्य का इतिहास/प्रकाशन-राजस्थानी ग्रंथागार जोधपुर/चतुर्थ संस्करण 2018 पृष्ठ स.117
[25] राजेंद्र शंकर भट्ट/महाराणा कुम्भा/प्रकाशन- नेशनल बुक ट्रस्ट नई दिल्ली/ प्रथम संस्करण 2008 पृष्ठ स.136-137
[26] राजेंद्र शंकर भट्ट/महाराणा कुम्भा/प्रकाशन- नेशनल बुक ट्रस्ट नई दिल्ली/ प्रथम संस्करण 2008 पृष्ठ स.123
[27] राजेंद्र शंकर भट्ट/महाराणा कुम्भा/प्रकाशन- नेशनल बुक ट्रस्ट नई दिल्ली/ प्रथम संस्करण 2008 पृष्ठ स.192
[28] राजेंद्र शंकर भट्ट/महाराणा कुम्भा/प्रकाशन- नेशनल बुक ट्रस्ट नई दिल्ली/ प्रथम संस्करण 2008 पृष्ठ स.278

Ansh - Journal of History
A Peer Reviewed International Refereed Journal
E-ISSN No. 2582-046X
International Journal for Research in Applied History
Website: www.anshjournal.com

असौ महौजाः प्रवरं वसंतपुरं व्यधत्ताभिनवो वसंतः!!

सप्तसागरविजित्वरानसौ सप्तपल्वल रानकारयत् !

श्री वसंतपुरनामिन चकीणः प्रोतये वसुमनीपुरंदर!!

अर्थात

इसी प्रकार महामुनि वशिष्ठ ने अपने योगादि से जिस अग्निकुंड को जागृत कर जिस क्षेत्र को प्रवित्र किया,उस वसंतपुर को अपने अधीनस्थ कर 'अभिनव वसंत का सम्मान धारण किया!!

अपनी दिग्विजय यात्राओ की बदौलत जिसने समस्त पृथ्वी को नाप लिया था, उसने लघु सप्त जलागारो के साथ वसंतपुर को इन्द्रपुरी की भांति ही प्रतिष्ठित किया!![29]

महाराणा कुम्भा ने वसंतपुर (जो वसंतगढ़ का ही नाम है) नगर को, जो पहले उजड़ गया था, फिर से बसाया और वहा विष्णु के सात जलाशयों का निर्माण करवाया। कुम्भा के समय के अन्य स्थानों के समान, वसंतगढ़ में भी स्वयं महाराणा के बनवाए स्थलों के अतिरिक्त, उनके समय का समृद्ध वर्ग भी निर्माण कार्य कराता था। जिसमे ज्यादातर जैन संप्रदाय के होते थे। जब सात जलाशय " विष्णु के निमित्त" बनवाने का शिला प्रमाण उपलब्ध है, इसका यह अभिप्राय अस्वाभाविक नही माना जा सकता कि यहा विष्णु का मंदिर भी बनाया गया हो। वसंतगढ़ में अब खंडहर ही ज्यादा मिलते हैं। आक्रमण और असुरक्षा ने इस सांकृतिक-सामरिक केंद्र को प्रायः विनष्ट कर दिया है। अन्य पर्वतीय दुर्गो के समान, वसंतगढ़ की रक्षा के लिए सुदृढ़ पाषण प्राचीर (दिवार) थी। जिसका बड़ा भाग अब भी देखा जा सकता है। कोई डेढ़ मिल इसका विस्तार है।[30]

आयड़ के पश्चात राजस्थान में धातु प्रतिमाओ की ढलाई सबसे बड़ा केंद्र बसंतगढ़ नगर था। इनमे सबसे पुरानी दो त्रितीर्थियां है जो भगवान पार्श्वनाथ की पद्मासन मुर्तिया है। इनमे से एक पर वि.स.726 (ई.स.669) व दूसरी पर वि.स. 756 (ई.स.699) का लेख है। यह धातु प्रतिमाएं है। जैन संरक्षण के कलाकारों ने धातु मिश्रण, ढलाई एवं बिम्ब संतुलन में अपूर्व सौन्दर्य का बोध आंकलन किया है। इस प्रकार की शैली उसके बाद 18वीं सदी तक धातु प्रतिमाओ का प्रतिमान बनी। यह धातु प्रतिमाएं पंच धातु की ढली हुई है। बसंतगढ़ से प्राप्त वि.स. 744 (ई.स.687) के दो खंड्गासन स्वरूप 4 फुट के बिम्ब धातु कला में नया अध्याय जोड़ते है। इनमे गांधार शैली की बुद्ध प्रतिमाओ की तरह पहनावा दिखाया गया है।[31] साक्षात् ब्रह्मा की

[29] राजेंद्र शंकर भट्ट/महाराणा कुम्भा/प्रकाशन- नेशनल बुक ट्रस्ट नई दिल्ली/ प्रथम संस्करण 2008 पृष्ठ स.338-339

[30] राजेंद्र शंकर भट्ट/महाराणा कुम्भा/प्रकाशन- नेशनल बुक ट्रस्ट नई दिल्ली/ प्रथम संस्करण 2008 पृष्ठ स.192

[31] [31] डॉ.सोहनलाल पटनी/अर्बुद मंडल की जैन धातु प्रतिमाए(सिरोही राज्य का राजनैतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास)/प्रकाशन-राजस्थानी ग्रंथागार जोधपुर-संस्करण 1990/ पृष्ठ.29

Ansh - Journal of History
A Peer Reviewed International Refereed Journal
E-ISSN No. 2582-046X
International Journal for Research in Applied History
Website: www.anshjournal.com

तरह सर्व प्रकार के रूपों को बनाने वाले शिल्पी शिवानाग के ये दोनों जिन बिम्ब बनाये है। इन मूर्तियों की कई विशेषताए है। 1) ये सवस्त्र है। 2)मस्तक घुंघराले बालो से भरा हुआ है। 3)इन मूर्तियों के कंधे पर की जटाएं मूल में एक होते हुए भी आगे जाकर तीन भागो में बंट जाने से हवा में लहराने के का दृश्य उपस्तिथ करती है। 4) यह मुर्तियॅा खोखली है और लाख जैसे लाल प्रदार्थ से भरी हुई है।[32]

यहाँ (बसंतगढ़) से कितनी पीतल की जैन मुर्तियाॅ भी निकली थी। जिसमे से 2 बड़ी मुर्तिया पिण्डवाडा के जैन मंदिर में रक्खी हुई है। यहाँ (बसंतगढ़ में) पहले अच्छी आबादी हुई थी और कई मंदिर थे। जो इस समय टूटे हुए पड़े है। यहाँ पर बड़ा तालाब भी था। लोगो में ऐसी प्रसिद्धि है, कि गुजरात के सुलतान महमूद बेगड़े ने उस तालाब को तोड़ डाला और वसंतगढ़ को ऊजड़ कर दिया था। फिर भी कुछ आबाद हुआ था, परन्तु अब तो यहाँ बहुधा खेती करने वाले भील ,गरासिया आदि लोग ही यहाँ रहते है।[33]

बसंतगढ़ का महत्व

बसंतगढ़ ऐतिहासिक दृष्टी से विशेष स्थान रखता है,फिर भी इतिहासकारों एवं पुरातत्वविदों ने इसे भुला दिया है। किसी भी इतिहासकार ने इस क्षेत्र पर विस्तृत से वर्णन नही किया है। बस कुछ एक पुस्तकों में बसंतगढ़ को लेकर संक्षिप्त में जानकरी मिलती है। इस क्षेत्र पर गहराई से अध्ययन किया गया है। जिसमें प्रमुख बाते सामनें आयी है वह निम्न है-

यहाँ से प्राप्त 625 ई. का लेख राजस्थान ही नही अपितु गुजरात के इतिहास पर भी प्रकाश डालता है। इस लेख में हमे उस समय के गुर्जर प्रदेश के शासक वर्मलात के साथ अर्बुद मंडल के शासक जो इसी का सामंत था,उसकी जानकारी मिलती है। यह लेख इस बात को स्वीकारता है, की गुर्जर प्रदेश का शासक वर्मलात का शासन बड़े भू-भाग पर फैला हुआ था और कई राज्य इसके सामंत हुआ करते थे। इस लेख में वर्मलात के सामंत का नाम "राजिल्ल "बताया हुआ है और इसके पिता का नाम व्रजभट्ट बताया हुआ है। लेकिन अगर हम प्रतिहार वंश पर अधययन करे तो यही बात सामने आती है की यह प्रतिहार वंश के मूल पुरुष हरीशचन्द्र का तीसरा पुत्र एवं उतराधिकारी "राजिल्ल" हैं।(घटियाल लेख.861ई.) डॉ. गोपीनाथ शर्मा, राजस्थान के इतिहास के स्रोत।

बसंतगढ़ लेख में राजिल्ल के पिता का नाम व्रजभट्ट(सत्यश्रय) बताया गया है। लेकिन घटियाल लेख में हरिचन्द्र बताया गया। अगर में इतिहास पर अच्छे से प्रकाश डाले तो हमे यह देखने और पढने को मिलता है,की प्राचीन समय में एक राजा अथवा शासक के कई नाम हुआ करते थे।

[32] डॉ.सोहनलाल पटनी/अर्बुद मंडल की जैन धातु प्रतिमाए/प्रकाशन-राजस्थानी ग्रंथागार जोधपुर-संस्करण 1990/ पृष्ठ.31
[33] गौरीशंकर हीराचंद ओझा/सिरोही राज्य का इतिहास/प्रकाशन-राजस्थानी ग्रंथागार जोधपुर/चतुर्थ संस्करण 2018 पृष्ठ स. 31

Ansh - Journal of History
A Peer Reviewed International Refereed Journal
E-ISSN No. 2582-046X
International Journal for Research in Applied History
Website: www.anshjournal.com

हरिचन्द्र मंडोर का शासक था और वो भी गुर्जर प्रदेश के शासको का सामंत था। इस लेख में "प्रतिहारबोटक" शब्द का प्रयोग हुआ है। जो यही साबित करता है उस समय प्रतिहार वंश उदय और अस्तित्व में था। 625 ई. के इस लेख में "राजस्थानीयादित्यभट्ट" शब्द पढने को मिलता है जो बड़ा महत्व का है। "राजस्थानीया" का शब्द अर्थ "अधिकारी" होता है। इस बात की जानकारी हमे 532 ई. के चित्तौड के दो खंड लेख में होती है(गोपीनाथ शर्मा रा.इ.स्रोत.पेज.47)

बसंतगढ़ 1400 पूर्व एक सुसज्जित संपन्न नगर था। यहाँ प्राप्त 687ई. की जैन प्रतिमा इस बात को साबित करती है की बसंतगढ़ सपन्न नगर के साथ जैन धर्मव्लाबियो का केंद्र था।उस समय यहाँ पंच धातुओ की मूर्तियों का निर्माण और स्थापना होती थीं। जो वर्तमान समय में भी देखने को नही मिलता है।
646 ई. के सामोली लेख में बसंतगढ़ (वटनगर) के लोगो की जानकारी मिलती है।जो बसंतगढ़ से वहा जाकर मंदिर का निर्माण करवाते है।यह लेख उस समय के बसंतगढ़ की आर्थिक स्तिथि को बतलाता है,की बसंतगढ़ के लोग उस समय संपन्न थे।जो दुसरे नगर में जाकर भी मंदिरों का निर्माण करवा देते थे।यहाँ पर मिला 1042 ई. का लेख आबू के परमार शासको के अध्ययन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।इस लेख में उत्पलराज से लगाकर पूर्णपाल तक की दी गई वंशावली आबू के परमार शासको के क्रम को जानने के लिए बेहद सहायक है।यह लेख इस बात को भी प्रतिपादित करता है की उस समय महिलाओ द्वारा भी मंदिर एवं जलाशयों का निर्माण करवाया जाता था। यहाँ मिले परमार शासको के लेख में और कीर्तिस्तंभ प्रशास्ति लेख में बसंतगढ़ को वशिष्ठपुर नाम से संबोधित किया है।जो इस बात का घोतक है की यह स्थान ऋषि वशिष्ठ से जुड़ा हुआ है या यह भी कहा जा सकता है की इस नगर की स्थापना ऋषि वशिष्ठ ने की हो।

कुम्भा के इस स्थान पर अधिकार होने के कई उदाहरण मिलते है।कुम्भा के जब सिरोही का अधिकांश भू-भाग मेवाड़ में मिलाया था।तब वसंतपुर में विशाल दुर्ग का निर्माण करवाया था।किसी भी पुस्तक में कुम्भा द्वारा यहाँ बनवाए गए इमारतो की जानकारी नही मिलती है।कुम्भा ने यहाँ की पहाड़ी पर दुर्ग का निर्माण करवाया था।इस दुर्ग की दिवार करीब 6 कि.मी क्षेत्र में फैली हुई है।इस दुर्ग की दिवार का अधिकांश हिस्सा आज भी देखा सकता है। इस दुर्ग के अंदर "जल संग्रह" का बेहतर उदहारण देखने को मिलता है। यहाँ कुम्भा द्वारा बनवाए गए जलाशयों को भी देखा जा सकता है। जिसमे परमार शासको की लाहिनी द्वारा बनवाई गई बावड़ी भी शामिल हैं। जिसका कुम्भा ने जीर्णोद्वार करके इसी बावड़ी के पास "विष्णु मंदिर" बनवाया था।यह विष्णु मूर्ति पहले इस बावड़ी पर बनी छतरी पर स्थापित थी बाद में छतरी का आधा हिस्सा टूट जाने पर मूर्ति को पास ही में मंदिर बनवाकर स्थापित कर दिया गया है। यहाँ कुम्भा के समय की एक विशाल गणेश मूर्ति भी देखने को मिलती ळे जो इस दुर्ग के मुख्य द्वार पर स्थापित थी। जिसे अब पास के मंदिर में स्थापित किया गया है। इस मुख्य द्वार को "गणेश द्वार" कहा जाता है जो वर्तमान में

Ansh - Journal of History
A Peer Reviewed International Refereed Journal
E-ISSN No. 2582-046X
International Journal for Research in Applied History
Website: www.anshjournal.com

बिलकुल टूट चूका है। इसी गणेश द्वार के आगे "गणेश वाव" भी बनी हुई है जो कुम्भा के समय की ही बनवाई हुई है। इस स्थान पर ब्रह्मा, विष्णु और महेश तीनो देवताओ के मंदिर देखने को मिलते हैं।

बसंतगढ़ ऐतिहासिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक दृष्टी से विशेष स्थान रखता है.लेकिन यह दुखद है की इतिहासकारों एवं पुरातत्वविदों ने इस ओर रूचि नही दिखाई।

बसंतगढ़ दुर्ग के सरक्षण को लेकर "भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण जोधपुर मंडल" को लिखा गया था। जिस पर "भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण जोधपुर मंडल" द्वारा जवाब में इसे सरक्षित करने के प्रयास हेतु लिखा पाया है। वर्ष 2019 में "महाराणा मेवाड़ चैरीटेबल फाउंडेशन" को इस दुर्ग के बचाव व प्रसार हेतु आग्रह किया था। जिस पर महाराणा मेवाड़ चैरीटेबल फाउंडेशन ने वर्ष 2019 में कुम्भा जयंती पर लगने वाली प्रदर्शनी में बसंतगढ़ को शामिल किया था। लेकिन हमे बसंतगढ़ को सरक्षित करने के लिए इसे इतिहास सम्बन्धित पुस्तको में भी जगह देनी होगी,ताकी इतिहास विषय में रूचि रखने वाले लोग इस स्थान अथवा क्षेत्र के महत्व के बारे में जान पाए।

संदर्भ ग्रंथ सूची-

1. गौरीशंकर हीराचंद ओझा, सिरोही राज्य का इतिहास,प्रकाशन-राजस्थानी ग्रंथागार जोधपुर,चतुर्थ संस्करण 2018
2. श्रीमती विजय लक्ष्मी,शिशुपालवध महाकाव्य में ध्वनी-तत्व एक अध्यायइलाहाबाद विश्वविधालय-1998
3. डॉ.सोहनलाल पटनी, सिरोही राज्य का राजनैतिक एवं सांकृतिक इतिहास, राजस्थानी ग्रंथागार जोधपुर, संस्करण 1990
4. एपिग्राफिया इंडिका,भाग 9 (1907-08), प्रकाशन –आर्कियोलॉजिकल सर्वे ऑफ़ इंडिया
5. जगदीशसिंह गहलोत, राजपूताने का इतिहास भाग-2, प्रकाशन-हिंदी साहित्य मंदिर जोधपुर , प्रथम संस्करण 1960
6. श्यामलदास, वीर विनोद द्वितीय भाग खंड 2, नरेद्र प्रकाश जैन मोतीलाल बनारसीदास ,दिल्ली द्वारा प्रकाशित
7. राजस्थान के इतिहास के स्रोत, डॉ.गोपीनाथ शर्मा, 9 वां संस्करण 2019, प्रकाशक – राजस्थान हिंदी ग्रन्थ अकादमी
8. पंडित विश्वेश्वरनाथ रेड, भारत के प्राचीन राजवंश भाग 1 राजेंद्र शंकर भट्ट, महाराणा कुम्भा, प्रकाशन- नेशनल बुक ट्रस्ट नई दिल्ली प्रथम संस्करण 2008
9. पूरणचन्द्र नाहर, जैन लेख संग्रह-प्रथम खंड, प्रकाशन – बी.एल. प्रेस-कलकत्ता 1918